ऑनलाइन ज्ञानरथ गायत्री परिवार का
दैनिक दिव्य सन्देश

दुर्लभ जीवन का सदुपयोग

प्रातः बिस्तर पर जब आँख खुलती है, तो कुछ समय आलस को दूर करके शय्या से नीचे उतरने में लग जाता है। मुख से कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं, लेकिन मस्तिष्क में अधिकाधिक स्पष्टता के साथ यह मान्यता जमानी चाहिए कि आज का एक दिन एक पूरे जीवन की तरह है। इसका श्रेष्ठतम सदुपयोग किया जाना चाहिए। समय का एक भी क्षण न तो व्यर्थ गँवाया जाना चाहिए और न ही अनर्थ कार्यों में लगाना चाहिए। सोचा जाना चाहिए कि ईश्वर ने अन्य किसी जीवधारी को वे सुविधाएँ नहीं दीं, जो मनुष्य को प्राप्त हैं। यह पक्षपात या उपहार नहीं बल्कि विशुद्ध अमानत है जिसे उत्कृष्ट आदर्शवादी रीति-नीति अपनाकर पूर्णता प्राप्त करने, स्वर्ग और मुक्ति का आनंद इसी जन्म में लेने के लिए दिया है। यह प्रयोजन तभी पूरा होता है, जब ईश्वर की इस सृष्टि को अधिक सुंदर, समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए उपलब्ध जीवन-संपदा का उपयोग किया जाए। मनुष्य को यह सुरदुर्लभ अवसर मिला है जिसका योजनाबद्ध सदुपयोग करने में ईश्वर की प्रसन्नता और जीवन की सार्थकता है।

अखंड ज्योति जनवरी 1978,पृष्ठ 33